International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 20-09-2025, Accepted: 20-10-2025, Published: 04-11-2025
Volume 11, Issue 6, 2025, Page No. 187-193

सतत विकास लक्ष्य–02 (शून्य भूख), भारत की भूख मिटाने की दिशा में यात्रा, प्रगति और चुनौतियाँ: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Upendra Goyal[1], Dr. Dinesh Singh Kushwah[2]
[1] Research Scholar, Department of sociology, Jiwaji University, Gwalior, Madhya Pradesh, India
[2] Assistant Professor, Department of sociology, Madhav College, Gwalior, Madhya Pradesh, India

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र "सतत विकास लक्ष्य–02 (शून्य भूख), भारत की भूख मिटाने की दिशा में यात्रा, प्रगति और चुनौतियाँ: एक समाजशात्रीय अध्ययन" में सतत विकास लक्ष्य–02 यानी शून्य भूख को ध्यान में रखकर भारत के संदर्भ में किया गया यह अध्ययन भूख जैसे मसलों पर एक गंभीर चिंतन को प्रस्तुत करता है। वर्णनात्मक शैली में लिखे गये इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य एसडीजी लक्ष्य–02 में भारत की वर्तमान स्थिति के आधार पर भविष्य में एसडीजी लक्ष्य शून्य भूख–02 की प्रगति की समीक्षा करना है। अध्ययन में एसडीजी, एनएफएसएच, नीति आयोग जैसी मानकीकृत रिपोर्टों को द्वितीयक स्त्रोत के तौर पर उपयोग किया गया है। यह अध्ययन प्रचुर तथ्यात्मक जानकारी के साथ भारतीय राज्यों के जैसा है, वैसा है (As It Is) के सिद्धांत का पालन करते हुए किया गया अध्ययन है। जिसमे भारत की भूख मिटाने की दिशा में की गयी यात्रा, समस्या के समाधान हेतु की गयी अब तक की प्रगति एवं मुख्य चुनौतियों को भी इसमें शामिल किया गया है, साथ ही यह "फूड सिक्योरिटी" से आगे बढ़कर "न्यूट्रिशन सिक्योरिटी" की दिशा में बहुआयामी प्रयास पर बल देता है।

मूल शब्दः खाद्य असुरक्षा, भुखमरी, कुपोषण, अल्पपोषण, सतत विकास लक्ष्य

प्रस्तावना

सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals – SDGs), जिन्हें "वैश्विक लक्ष्य" भी कहा जाता है, संयुक्त राष्ट्र (UN) द्वारा वर्ष 2015 में अपनाए गए 17 लक्ष्यों का एक समूह है। इनका उद्देश्य वर्ष 2030 तक विश्व भर में गरीबी उन्मूलन, भुखमरी की समाप्ति, असमानता कम करना, पर्यावरण की रक्षा करना और सभी के लिए शांति और समृद्धि सुनिश्चित करना इत्यादि है। सतत विकास का विचार यह सुनिश्चित करने पर आधारित है कि वर्तमान पीढ़ी अपनी आवश्यकताओं को इस तरह पूरा करे कि भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता न हो। सतत विकास की अवधारणा पहली बार 1987 की ब्रंटलैंड रिपोर्ट ("Our Common Future") में प्रमुखता से उभरी। इसके बाद 1992 के रियो अर्थ समिट में सतत विकास के सिद्धांतों पर सहमति बनी। सतत विकास लक्ष्य (SDGs) का आधार मिलेनियम डेवलपमेंट गोल्स (MDGs) थे, जो 2000–2015 के बीच 8 वैश्विक लक्ष्यों पर केंद्रित थे। हालांकि MDGs ने गरीबी और स्वास्थ्य में सुधार के क्षेत्रों में प्रगति की, लेकिन यह व्यापक, समावेशी और सतत विकास पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सका, क्योंकि इसमें तात्कालिक जरूरतों को अधिक ध्यान में रखा गया था। वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने "2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट" को अपनाया। इस एजेंडा में 17 सतत विकास लक्ष्य (SDGs), 169 विशिष्ट लक्ष्य (Targets) और 231 संकेतकों (Indicators) को शामिल किया गया। ये लक्ष्य "Leave No One Behind" (किसी को पीछे न छोड़ें) के सिद्धांत पर आधारित हैं, जिसका अर्थ है कि विकास का लाभ सभी तक पहुँचना चाहिए।[1]

SDG के 17 लक्ष्यों में दूसरा और बेहद महत्वपूर्ण लक्ष्य है भूखमरी की समाप्ति। यह भुखमरी को समाप्त करना, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण प्राप्त करना तथा टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने की थीम पर आधारित है। एसडीजी–02 खाद्य सुरक्षा, पोषण, ग्रामीण परिवर्तन और टिकाऊ कृषि के बीच जटिल अंतर्संबंधों पर भी प्रकाश डालता है। SDG–02 में प्रगति को मापने के लिए 08 टारगेट और 14 संकेतक हैं। 08 टारगेट में से 05 को टारगेट के रूप में निर्धारित किया गया है, जबकि 03 को उन टारगेट को हासिल करने के साधन के रूप में तय किया गया है।[2]

सतत विकास लक्ष्य–02 (शून्य भूख) और भारत

सतत विकास लक्ष्यों में कुल 100 अंकों में से भारत 66.95% के समग्र स्कोर के साथ (कुल 17 गोल्स में प्राप्त अंक) भारत 167 देशों में 99 वे स्थान पर है।[3]

रेखाचित्र क्र. - 1

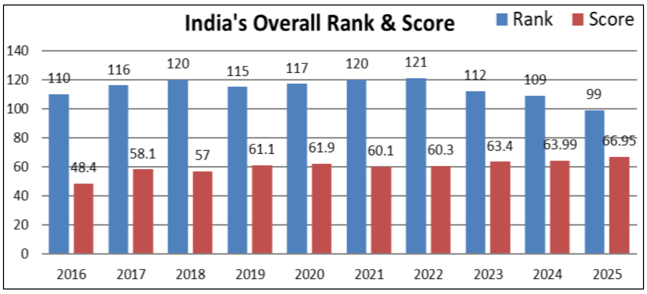

Sustainable Development Goals Various Years Report[3]

2017 से 2022 तक भारत की प्रगति के संदर्भ में सतत विकास लक्ष्यों में धीमी या स्थिर गति (रेखा चित्र क्र.–01) से होते परिवर्तन यह समझने के लिए पर्याप्त हैं, कि उपभोक्तावाद के इस दौर में मिश्रित पूँजीवाद के माध्यम से हमने उच्च जीडीपी वृद्धि तो हासिल की है, लेकिन किसी समाज के विकास के लिए आवश्यक कुछ मूलभूत सवालों को पीछे छोड़ दिया है जैसे शून्य भूख (लक्ष्य – 02)।

एक अन्य महत्वपूर्ण चर्चा यह भी है, कि सतत विकास रिपोर्ट 2025 के स्पिलओवर इंडेक्स में भारत 96.07 स्कोर के साथ 167 देशों में 17वें स्थान पर है। स्पिलओवर इंडेक्स किसी देश के कार्यों से अन्य देशों के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने की क्षमता पर पड़ने वाले सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन करता है। उच्च स्कोर यह दर्शाता है कि कोई देश अधिक सकारात्मक और कम स्कोर नकारात्मक स्पिलओवर प्रभाव प्रदर्शित करता है, जिससे वैश्विक सतत विकास प्रयासों को समर्थन मिलता है। स्पिलओवर इंडेक्स में भारत की स्थिति वैश्विक सतत विकास पर गंभीर प्रभाव को दर्शाती है, जिसमें व्यापार, आर्थिक और वित्तीय प्रथाओं में

सन्निहित पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव और वैश्विक सुरक्षा में योगदान जैसे कारक शामिल हैं।[4] वहीं स्पिलओवर इंडेक्स में बेहतर प्रदर्शन का अर्थ है की वैश्विक स्तर पर SDG के मामलों में हम (भारत) प्रभावकारी भूमिका रखते हैं। अब इस बात को शून्य भूख (Goal–02) के संदर्भ में समझें तो इस मामले में भारत को लाल रंग (🔴Major challenges remain) से प्रदर्शित किये जाने के साथ यह भी माना गया है की भूख जैसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों के मामले में भारत की प्रगति रुकी (➡Stagnating)* हुई है। यानि शून्य भूख–02 स्वयं (भारत) और विश्व को गंभीर तौर पर प्रभावित करने में सक्षम हैं।

***स्कोर का स्थिर रहना या आवश्यक दर से 50% से कम पर बढ़ना**

तालिका क्र. – 01	Value	Year	Rating	Trend
Prevalence of undernourishment (%)	13.7	2022	🟠	➡
Prevalence of stunting in children under 5 years of age (%)	35.5	2020	🔴	➡
Prevalence of wasting in children under 5 years of age (%)	18.7	2020	🔴	➡
Minimum dietary diversity among children aged 6–23 months (%)	23.6	2020	🔴	⚫
Prevalence of obesity, BMI ≥ 30 (% of adult population)	7.3	2022	🟢	➡
Human Trophic Level (best 2–3 worst)	2.3	2022	🟡	⬇
Cereal yield (tonnes per hectare of harvested land)	3.6	2022	🟢	⬆
Sustainable Nitrogen Management Index (best 0–1.41 worst)	0.8	2018	🔴	↗
Exports of hazardous pesticides (tonnes per million population)	0.9	2023	🟢	⚫

Dashboard	SDG achieved 🟢	Challenges remain 🟡	Significant challenges remain 🟠	Major challenges remain 🔴	Information Unavailable ⚫
Trends	On track or maintaining SDG achievement ⬆	Moderately Improving ↗	Stagnating ➡	Decreasing ⬇	Trend information unavailable ⚫⚫

SDG2 – Zero Hunger India's situation on various indicators[5]

अभी हाल ही में सतत विकास लक्ष्य 2025 की रिपोर्ट में शून्य भूख लक्ष्य–02 को 100 में से 50 से कम अंक दिए गए हैं। कुल 9 विशिष्ट लक्ष्यों में से 4 विशिष्ट लक्ष्यों को मुख्य चुनौती (major challenges remain) माना गया है। आधे विशिष्ट लक्ष्यों में प्रगति को रुका (Stagnating) हुआ माना गया है, जबकि दो विशिष्ट लक्ष्य में आंकड़ों का अपर्याप्त होना पाया गया है। अतः सतत विकास लक्ष्यों के अपने समग्र अध्ययन के आधार पर हम यह कहने में सक्षम हैं की, शून्य भूख लक्ष्य–02 के मामले में हमने प्रगति तो की है लेकिन अस्थिर और अनियमित, साथ ही कोविड–19 जैसे कारकों ने हमे वापस वही ला दिया है जहाँ से हमने शुरू किया था।

तालिका क्र. – 2

		Prevalence of undernourishment (%, 2021)																							Source
ISO	**Country**		2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	FAO
IND	India		18.3	19.9	21.5	22.0	21.4	19.2	16.8	15.6	15.3	14.8		14.3	13.5	12.9	12.6	12.2	11.5	10.8	10.3	11.6	13.1	13.7	
Prevalence of stunting in children under 5 years of age (%, 2021)																									
ISO	**Country**							2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020			UNICEF et al.
IND	India							47.8							38.7	37.9			34.7			35.5			
Prevalence of wasting in children under 5 years of age (%, 2021)																									
ISO	**Country**							2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020			UNICEF et al.
IND	India							20.0							15.1	20.8			17.3			18.7			
Minimum dietary diversity among children aged 6-23 months																									
ISO	**Country**																					2020			UNICEF et al.
IND	India																					23.6			
Prevalence of obesity, BMI>30% of adult population 2000-2022																									
ISO	**Country**	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	WHO
IND	India	1.8	1.95	2.11	2.27	2.45	2.63	2.82	3.01	3.22	3.43	3.65	3.88	4.11	4.36	4.63	4.91	5.21	5.52	5.85	6.18	6.53	6.89	7.27	
Human Trophic Level (best 2-3 worst, 2021)																									
ISO	**Country**	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	Bonhommeau et al. (2013), updated 2025
IND	India	2.19	2.19	2.19	2.19	2.2	2.2	2.2	2.21	2.21	2.21	2.21	2.21	2.21	2.21	2.21	2.23	2.23	2.24	2.24	2.25	2.26	2.27	2.26	
Cereal yield (tonnes per hectare of harvested land, 2022)																									
ISO	**Country**	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	FAO
IND	India	2.29	2.42	2.29	2.43	2.35	2.41	2.45	2.58	2.64	2.58	2.68	2.86	2.96	2.98	2.97	2.85	3.00	3.13	3.28	3.42	3.38	3.50	3.57	
Sustainable Nitrogen Management Index (best 0-1.41 worst, 2018)																									
ISO	**Country**	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018					Zhang and Davidson (2019)
IND	India	0.93	0.92	0.96	0.91	0.92	0.91	0.90	0.85	0.86	0.89	0.83	0.81	0.78	0.78	0.79	0.83	0.78	0.77	0.77					
Yield gap closure of potential yield2022																									
ISO	**Country**																						2021	2022	FAO
IND	India																						0.88	0.91	

India's Sustainable Development (Goal-2, Zero Hunger) Situation on Various Indicators[6]

कुपोषण की व्यापकता का तात्पर्य उस आबादी के प्रतिशत से है, जो अपनी दैनिक न्यूनतम ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त भोजन प्राप्त नहीं कर पाती। (FAO) पिछले दो दशकों (2004–22%) में भारत में भूख के मामले में व्यापक प्रगति हुई है, लेकिन Covid–19 (2019–11.6%) जैसी महामारी के कारण वर्तमान (2022–13.7%) प्रगति लगभग एक दशक (2012–13.5%) पीछे चली गयी है। स्टंटिंग (Stunting) का मतलब है, बच्चों की लंबाई का उनकी उम्र के अनुसार कम होना, जो कि लंबे समय तक पोषण की कमी और बार–बार बीमारियों का परिणाम होता है। हमने एक लम्बे समय (2006–47.8%) में इसमें व्यापक सुधार किया (2017–34.7%) लेकिन वर्तमान में यह भी वृद्धि (2020–35.5%) का संकेत देती है। वेस्टिंग (Wasting) बच्चों कि लंबाई के अनुपात में वजन में कमी को दर्शाता है, जो तीव्र कुपोषण का संकेत है। वेस्टिंग का उच्च स्तर (2017–17.3% की तुलना में 2020 में 18.7%) सार्वजनिक स्वास्थ्य और पोषण प्रणाली की गंभीर स्थिति को दिखाता है। 2020 में केवल 23.6% बच्चों को विविध आहार मिला। यह संकेत करता है कि अधिकांश बच्चों को संतुलित और विविध पोषक तत्वों वाला भोजन नहीं मिल पा रहा है। मोटापा (Obesity) तब होता है जब किसी व्यक्ति का बॉडी मास इंडेक्स (BMI) 30 या उससे अधिक होता है।(WHO) यह खराब जीवनशैली, असंतुलित आहार और शारीरिक गतिविधियों की कमी, प्रोसेस्ड फूड या आनुवंशिक रूप से संशोधित खाद्य पदार्थों (GM Crops) का परिणाम है। भारत में मोटापा धीरे–धीरे या चरणबद्ध रूप से (2022–7.27%) एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या बनता जा रहा है। भारत का मानव ट्रॉफिक स्तर 2.26 (2021) यह दर्शाता है कि भारत का भोजन मुख्य रूप से शाकाहारी और अनाज आधारित है। हालांकि, धीरे–धीरे बढ़ती मांसाहार खपत से आहार पैटर्न में बदलाव हो रहा है। 2000 में अनाज उत्पादन(Cereal Yield) 2.29 टन/हेक्टेयर था, जो 2022 में बढ़कर 3.57 टन/हेक्टेयर हो गया खाद्य उत्पादन में सुधार के बावजूद कुपोषण की समस्या बनी हुई है, संभवतः बढ़ती जनसंख्या, गरीबी व महंगाई दर में वृद्धि जैसे कारण इसके लिए उत्तरदायी हो। 2018 में 0.77 का SNMI (Sustainable Nitrogen Management Index) स्कोर यह दर्शाता है कि भारत को नाइट्रोजन के कुशल और सस्टेनेबल प्रबंधन के लिए सुधार की आवश्यकता है। सही नीतियों और टिकाऊ कृषि प्रथाओं को अपनाने से पर्यावरणीय क्षति को कम किया जा सकता है और फसल उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। भारत में 2022 में 0.91 टन प्रति मिलियन जनसंख्या खतरनाक कीटनाशकों का निर्यात दर्शाता है कि यह उद्योग अभी भी सक्रिय है। इसे पर्यावरणीय स्थिरता और स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए नियंत्रित करना आवश्यक है। टिकाऊ कृषि प्रथाओं और जैविक विकल्पों को अपनाने से इस निर्भरता को कम किया जा सकता है।

सतत विकास लक्ष्य–02 (शून्य भूख), भारत (राज्यों) में भूख और पोषण की स्थिति

1940 के बाद से समाजशास्त्र में संरचनात्मक प्रकार्यवादी अध्ययनों की बाढ़ ने समाज के अलग–अलग पहलुओं का बारीक़ से अध्ययन किया और समाजशास्त्र में व्यापक जानकारी प्रदान की।

तुलनात्मक तौर पर सतत विकास लक्ष्यों और भारतीय राज्यों में गौर करें तो सर्वप्रथम भारतीय संदर्भ में POU जैसी परिकल्पना का अभाव और केवल बाल कुपोषण तक सीमित होना या व्यस्क जनसंख्या की अनदेखी करना (NFHS की रिपोर्ट में 15 से 49 आयु वर्ग की जनसंख्या को BMI के आधार पर शामिल किया जाता है लेकिन आंकड़ों में समय अंतराल का अधिक होना, अधिक खर्चीली प्रक्रिया, नियमित रिपोर्ट का प्रकाशित न होना इत्यादि कारण इस प्रतिवेदन के व्यावहारिक प्रासंगिकता पर सवाल खड़े करता है) राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतिवेदनों के संकीर्ण चिंतन के अलावा सरकारों द्वारा आधे अधूरे वादे भी गंभीर समस्या है। पोषण अभियान के तहत सरकार यह घोषणा कर चुकी है। की 2022 तक "कुपोषण मुक्त भारत"[21] बना दिया जाएगा। सतत विकास लक्ष्य में अपनी प्रतिबद्धता के तहत भी भारत को 2030 तक शून्य भूख का लक्ष्य हासिल करना है। 2022 के खोखले वादे से हम यह समझ सकते हैं कि पानी में डूबते शरीर भले मुर्दा बनकर ही ऊपर आते हो, लेकिन सत्य अपनी जीवित अवस्था में ही उभरकर सामने आ जाता है। भूतकाल गुजर चुका है और भविष्य सामने है इसलिए समग्र के विकास के लिए उसके अंगों को समझना जरूरी है।

तालिका क्र. – 3

		2.1	2.2	2.2	2.2	2.2	2.3	2.3	
S.No.	**States/UTs**	**Percentage of beneficiaries covered under National Food Security Act (NFSA), 2013**	**Percentage of children under five years who are underweight**	**Percentage of children under five years who are stunted**	**Percentage of pregnant women aged 15–49 years who are anaemic**	**Percentage of women (aged 15–49 years) whose Body Mass Index is below 18.5**	**Rice and wheat produced per unit area (three-year average) (kg/ha)**	**Gross Value Added (constant prices) in agriculture per worker (in lakhs/ worker)**	**SDG 2 Index Score**
1.	Andhra Pradesh	100	29.6	31.2	53.7	14.8	3516.1	1.5	67
2.	Arunachal Pradesh	96.53	15.4	28	27.9	5.7	1846.7	1.97	81
3.	Assam	99.71	32.8	35.3	54.2	17.7	2078.49	0.76	47
4.	Bihar	100	41	42.9	63.1	25.6	2480.14	0.34	24
5.	Chhattisgarh	100	31.3	34.6	51.8	23.1	1933.78	0.49	40
6.	Goa	100	24	25.8	41	13.8	2688.76	5	74
7.	Gujarat	91.84	39.7	39	62.5	25.2	2794.96	1.33	41
8.	Haryana	100	21.5	27.5	56.4	15.1	4240.36	2.17	75
9.	Himachal Pradesh	77.8	25.5	30.8	42.2	13.9	1861.49	0.76	51
10.	Jharkhand	99.98	39.4	39.6	56.8	26.2	2086.15	0.38	28
11.	Karnataka	100	32.9	35.4	45.7	17.2	2867.66	0.94	56
12.	Kerala	100	19.7	23.4	31.4	10.1	2882.2	2.28	84

13.	Madhya Pradesh	97.87	33	35.7	52.8	23	2946.62	0.92	48
14.	Maharashtra	100	36.1	35.2	45.7	20.8	1954.84	Null	45
15.	Manipur	80.15	13.3	23.4	32.4	7.2	2584.66	Null	77
16.	Meghalaya	100	26.6	46.5	45	10.8	2738.04	0.64	52
17.	Mizoram	96.67	12.7	28.9	34	5.3	1737.4	Null	76
18.	Nagaland	94.99	26.9	32.7	22.2	11.1	1583.3	0.68	60
19.	Odisha	99.93	29.7	31	61.8	20.8	2218.65	0.6	45
20.	Punjab	100	16.9	24.5	51.7	12.7	4491.8	2.76	83
21.	Rajasthan	98.52	27.6	31.8	46.3	19.6	3598.85	1.09	64
22.	Sikkim	93.78	13.1	22.3	40.7	5.8	1849.83	1.01	77
23.	Tamil Nadu	99.84	22	25	48.2	12.6	3564.23	1.05	75
24.	Telangana	99.96	31.8	33.1	53.2	18.8	3392.62	1.05	58
25.	Tripura	97.65	25.6	32.3	61.5	16.2	3080.7	1.52	63
26.	Uttar Pradesh	99.29	32.1	39.7	45.9	19	3234.68	0.73	50
27.	Uttarakhand	100	21	27	46.4	13.9	2857.33	0.73	66
28.	West Bengal	100	32.2	33.8	62.3	14.8	2947.96	1.02	56
29.	Andaman and Nicobar Islands	96.21	23.6	22.5	53.7	9.4	2451.15	Null	69
30.	Chandigarh	60.29	20.6	25.3	Null	13	4961.69	3.66	71
31.	Dadra and Nagar Haveli and Daman and Diu	75.6	38.7	39.4	60.7	25.1	2096.07	Null	22
32.	Delhi	100	21.8	30.9	42.2	10	4067.96	1.95	80
33.	Jammu and Kashmir	99.61	21	26.9	44.1	5.2	2027.18	1	73
34.	Ladakh	99.99	20.4	30.5	78.1	4.4	1600.23	Null	57
35.	Lakshadweep	99.72	25.8	32	20.9	8	Null	Null	83
36.	Puducherry	99.92	15.3	20	42.5	9	2998.02	1.26	84
	India	99.01	32.1	35.5	52.2	18.7	3052.3	0.86	52
	Target	100	13.3	23.7	25.2	7.76	5322.08	1.22	100

Performance of States and Uts On Indicators of Sdg 2[7]

Aspirant (0-49) Performer (50-64) Front Runner (65-99) Achiever (100)

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA), 2013 के तहत लगभग सभी राज्यों में 90% से अधिक लाभार्थी कवर किए गए हैं, जो खाद्य उपलब्धता और सुलभता में दृढ़ स्थिति को दर्शाता है। लेकिन इसके बावजूद 5 वर्ष से कम आयु के 32.1% बच्चे अल्पवजन (Underweight) हैं, 35.5% बच्चे ठिगने (Stunted) हैं, और 52.2% गर्भवती महिलाएँ रक्ताल्पता (Anaemia) से ग्रस्त हैं। इसका अर्थ है कि भारत में भोजन की उपलब्धता तो है, परंतु भोजन की गुणवत्ता और पोषण मूल्य में कमी है। अर्थात् भारत में "Food Security" तो है, पर "Nutrition Security" अभी अधूरी है। कुपोषण और एनीमिया के मामलों में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ है। बिहार (41%), झारखंड (39.4%) और मध्य प्रदेश (33%) में 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में कम वजन की समस्या गंभीर बनी हुई है। इसी प्रकार, गुजरात (62.5%), ओडिशा (61.8%) और बिहार (63. 1%) में गर्भवती महिलाओं में एनीमिया का उच्च स्तर चिंता का विषय है।

चित्र क्र.– 1

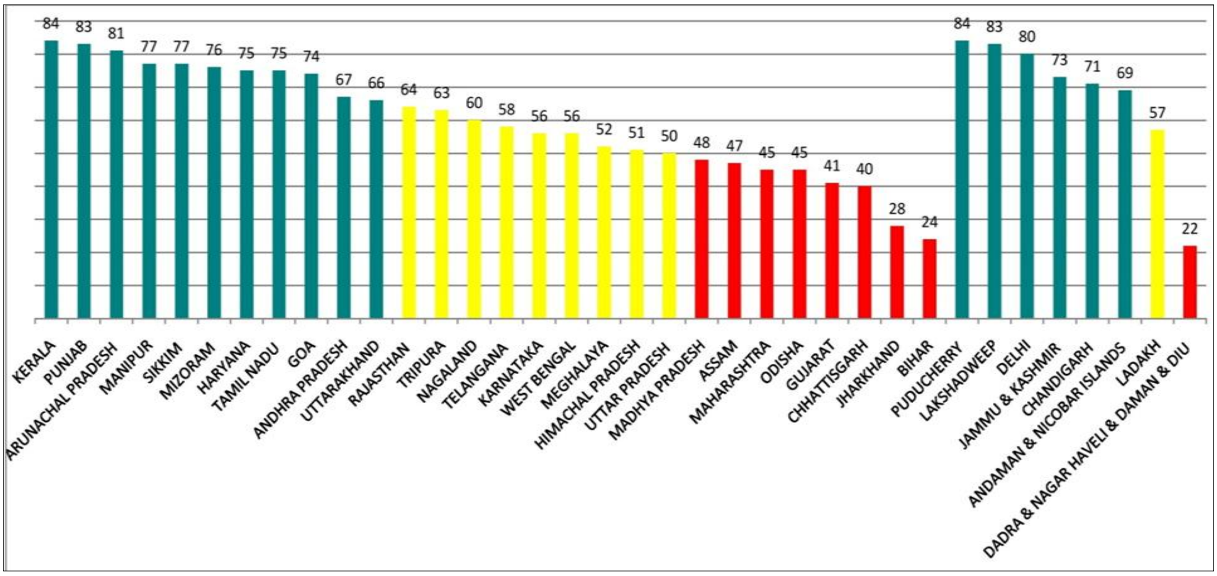

SDG 2 Index Score of States/ UTs[8]

चित्र क्र.– 2

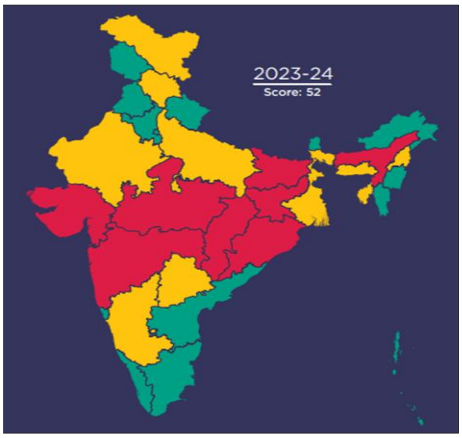

Performance of State／UT on SDG 2[9]

भुखमरी जैसी समस्याओं के साथ सर्वाधिक महत्वपूर्ण चुनौती यह होती है की कई बार यह समस्या व्यक्तिगत होती है या समय और स्थान के सापेक्ष इसलिए आंकड़ों पर हमारी अत्यधिक निर्भरता होना स्वाभिक है। नीति आयोग की सतत विकास लक्ष्य–02 के संदर्भ में दी गई रिपोर्ट में 50 से कम अंक वाले राज्यों या केंद्र शासित प्रदेशों को आकांक्षी (Aspirants) माना गया है। संपूर्ण देश में लगभग 8 राज्यों व 01 केंद्र शासित प्रदेश को आकांक्षी माना गया है जिनका भुखमरी जैसे मामलों में कमजोर प्रदर्शन है। चिंताजनक बात है की संपूर्ण मध्य भारत इसकी चपेट में है जिसमें गुजरात और महाराष्ट्र जैसे विकसित राज्य व बिहार, मध्य प्रदेश जैसे बड़ी जनसंख्या वाले राज्यों का शामिल होना भुखमरी के संदर्भ में हमारी कमजोरी और अस्थिर स्थिति को दर्शाता है। सकल तौर पर देश में लगभग 35% या 1／3 जनसंख्या भुखमरी या कुपोषण जैसे मामलों से प्रभावित है।

सतत विकास लक्ष्य–02, लक्ष्यों और 2030 तक संभावित लक्ष्य प्राप्ति की तुलना

तालिका क्र. – 4			India's Current Situation (NFSH-5) 2023-24
Indicators	**Targets**	**Justificton of targets**	
Percentage of Beneficiaries Covered Under National Food Security Act (NFSA), 2013	100	NFSA 2013 is a government of India Act that AIIMS to provide food and nutritional security by ensuring access to an adequate quantity of quality food at affordable prices. It is aimed that all person belonging to The Eligible population under NFSA, 2013 benefit from the act.	99.01
Percentage of Children Under 5 Years Who Are Underweight	13.3	Global SDG target 2.2 aims to end all forms of malnutrition. the target has been fixed as the average of the top 3 best performing states from the base Year (2015 – 2016)	32.1
Percentage of Children Under 5 Year Who Are Stunted	23.7	The Target for India Has Been Sent At 23.7 Percentage as Per WHO's Global Nutrition Targets Tracking Tool.	35.50
Percentage of Pregnant Women Aged 15 To 49 Years Who Are Anemic	25.2	The WHO Target A 50% Reduction of Anemia in Women of Reproductive Age By 2025 (Global Nutrition Target 2025, Policy Brief Series) Hence, 50% Reduction from Base Year (2015-2016) Has Been Set as The Target	52.2
Percentage of Women (Age 15 To 49 Years) Whose Body Mass Index Is Below 18.5	7.76	Global SDG target 2.2 aim to end all forms of malnutrition in women. target has been fixed as the average of the top 3 best performing States from the base Year 2015-2016	18.7
Rice and Wheat Produced Per Unit Area (Three Year Average in Kg/Ha	5322.08	Global SDG target 2.3 Aims to double the agriculture productivity by 2030. Hence the target is to double the agriculture productivity from the base Year (2015-2016).	3052.25
Gross Value Added (GVA)	1.22	Global SDG Target 2.3 Aims to Double the Agriculture Productivity and	0.86

(Constant Price) In Agriculture Per Worker (In Lakh Per Worker)		Incomes of Small-Scale Food Producers. Therefore, The Target Has Been Sent to Double the GVA In Agriculture Per Worker from The Base Year (2015-2016) Figures	

India's SDG TARGETS and India's Current Situation (NFSH–5) 2023-24[10]

तालिका क्रमांक–04 SDG–02 के मानदंडों और NFHS–5 (2023–2024) यानि वर्तमान स्थति के बुनयादी अंतर को दर्शाती है जो यह लगभग तीन खण्डों में है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFHS)–2013 के तहत लाभार्थियों को कवरेज, कुपोषण संबंधी संकेतक, कृषि उत्पादक्ता और कृषि श्रमिकों की आय। NFSA के तहत 99.01% पात्र आबादी को कवर किया गया है, जो लक्ष्य 100% के बहुत करीब है। यह इंगित करता है कि भारत में खाद्य सुरक्षा अधिनियम काफी हद तक प्रभावी रहा है, और अनाज की अनुपलब्धता और पहुंच जैसे मुद्दे अप्रभावी है।
कम वजन वाले बच्चों (Underweight) की दर – लक्ष्य 13.3% था, लेकिन वास्तविक आंकड़ा 32.1% है, जो लक्ष्य से दोगुने से भी अधिक है। अविकसित (Stunted) बच्चों का प्रतिशत – लक्ष्य 23.7% था, लेकिन यह 35.5% पर बना हुआ है। गर्भवती महिलाओं में एनीमिया – लक्ष्य 25.2% था, जबकि वास्तविक आंकड़ा 52.2% है, जो लक्ष्य से दोगुना अधिक है। कम BMI (Percentage Of Women (Age 15 To 49 Years) Whose Body Mass Index Is Below 18.5) वाली महिलाओं की संख्या – लक्ष्य 7.76% था, लेकिन वास्तविक आंकड़ा 18.7% है, जो चिंता का विषय है, इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि भारत अभी भी कुपोषण को समाप्त करने में अपेक्षित प्रगति नहीं कर सका है, और महिलाओं और बच्चों में कुपोषण की दर SDG लक्ष्यों से बहुत पीछे है।
गेहूं और चावल का उत्पादन प्रति हेक्टेयर – लक्ष्य 5322.08 किग्रा/हेक्टेयर था, लेकिन वास्तविक उत्पादन 3052.25 किग्रा/हेक्टेयर है, जो लक्ष्य से 43% कम है। कृषि क्षेत्र में प्रति श्रमिक सकल मूल्य संवर्धन (GVA) – लक्ष्य 1.22 लाख/श्रमिक था, लेकिन वास्तविकता में यह 0.86 लाख/श्रमिक है। यह इंगित करता है कि कृषि क्षेत्र में उत्पादकता और किसानों की आय बढ़ाने के लिए अभी भी बड़े सुधारों की आवश्यकता है।
हम निर्णय में जल्दबाजी नहीं करना चाहते ना ही समयपूर्व किसी तरह की घोषणा लेकिन तब भी आंकड़े महत्वपूर्ण हैं, और यह स्पष्ट करते हैं की अगले 5 वर्षों में सतत विकास लक्ष्य–02 को प्राप्त कर पाना असंभव है। अतः भारत को "शून्य भूख" (Zero Hunger) और "कुपोषण मुक्त समाज" की दिशा में गंभीर प्रयास करने होंगे।

भारत की भूख मिटाने की दिशा में यात्रा

हमने अलग–अलग दृष्टिकोणों से समस्या पर गंभीर और विस्तृत चर्चा की, लेकिन मुद्दे की जड़ को समझने के लिए इस यात्रा पर विमर्श करना आवश्यक है। मानव समाज के उदय के साथ ही भोजन का भण्डारण आवश्यक माना गया है। ताकि आपदा के समय बचाव किया जा सके। हालाँकि इस यात्रा की विधिवत शुरुआत 1943 के बंगाल में अकाल से मानी जाती है। इस अकाल की मुख्य वजह खाद्यान की कमी नहीं थी बल्कि नीतियों और सरकारी लापरवाही का परिणाम था। (सेन अमर्त्य 1981)[11] स्वतंत्रता के बाद भारतीय कृषि अविकसित थी और फसल उत्पादन अपर्याप्त था। विभाजन के दौरान पंजाब और हरियाणा जैसे उपजाऊ क्षेत्र पाकिस्तान चले गए, जिससे खाद्यान्न संकट गहरा हो गया।[12] जिसके कारणवश 1950–60 के दशक में भारत ने अमेरिका से PL–480 (Agricultural Trade Development And Assistance Act of 1954) के तहत अमेरिका से गेहूं और अन्य अनाज प्राप्त किये। जिसका सकारात्मक (अमेरिका का अनुचित दबाव) परिणाम यह निकला की 1960 के दशक में हरित क्रांति की शुरुआत हुई यह भारत में खाद्य आत्मनिर्भरता की दिशा में पहला बड़ा कदम था। इसके बाद हमने निरंतर और व्यापक सुधार किये जिसमे 1965 में Food Corporation India (FCI) से लेकर सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) और 1975 में Integrated Child Development Services (ICDS) की स्थापना। 1995 में मिड डे मील जैसे बहुउद्देशीय मॉडल भी सामने आये। 1997 में TPDS लागू किया, जिसने PDS को अधिक तर्कसंगत बनाया (BPL – APL) और अंत्योदय अन्न योजना को भी इसमें शामिल किया गया। 2001 में PUCL बनाम भारत संघ मामले में भोजन को Right To Food यानि मौलिक अधिकार (Artical–21) तहत शामिल किया गया। अंतिम तौर पर 2013 के राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA) द्वारा रियायती दरों पर भोजन की कानूनी ग्यारण्टी दी गयी। भारत ने खाद्यान्न आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है, लेकिन भूख और कुपोषण को मिटाने की दिशा में यात्रा अभी भी पूरी नहीं हुई है, और यह चर्चा ग्लोबल हंगर इंडेक्स के आंकड़ों से भी स्पष्ट होती है। जहाँ 123 देशों 25.8 स्कोर(Serious) के साथ भारत 102 वे स्थान पर है। साथ ही 12.0% जनसंख्या को कुपोषित (undernourished) माना गया है।[13] खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर होने के बावजूद, भारत भूख और कुपोषण के उच्च स्तर का सामना कर रहा है, जो इसकी विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण विरोधाभास को उजागर करता है। खाद्यान्न पर्याप्त भारत को भूख मुक्त भारत होना चाहिए, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को स्वस्थ और उत्पादक जीवन जीने का अवसर मिले।

प्रगति और चुनौतियाँ

भुखमरी एक गंभीर समस्या है जो सीधे तौर पर मनुष्य के दैहिक और मानसिक विकास से जुडी हुई है।[14] हाल के दशकों में हमने जो भी प्रगति की है वह एक लम्बे और सतत प्रयासों का परिणाम है, साथ ही तकनीक और विशाल मानवसंसाधनो (आंगनवाड़ी, स्वसहायता समूह) ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।[15]
2015 में भारत में Per Capita Net Availability of Foodgrains 169.8 kg Per Annum थी, जो की 2023 में 207.6 kg Per Annum हो गयी है।[16] 2020–2021 में per capita net availavility 511.7 grams per day थी। जो की 2022–2023 में बढ़कर 568.8 grams per day हो गयी है।[17] इन संख्यात्मक आंकड़ों के अतिरिक्त तकनीकी स्तर पर भी One Nation One Ration Card, Poshan Tracker, e-PoS मशीने, DBT जैसे उपायों से कार्य में तेजी, भ्रष्टाचार में कमी व पारदर्शिता बड़ी है, विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिवेदनों और सूचकांकों में भी हमने प्रगति की है, लेकिन अभी भी खाद्य और पोषण सुरक्षित राष्ट्र के तौर पर हमे एक लम्बा रास्ता तय करना है।
भले ही हमने खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल कर ली हो। लेकिन अभी भी कई मसले पर हमें चुनौतियों का सामना करना है। भारत में बाल कुपोषण बड़ी समस्या है। इसलिए भोजन की गुणवत्ता से संबंधित मुद्दे अभी भी महत्वपूर्ण है क्योंकि कुपोषण जैसे मुद्दे एक चक्र में चलते हैं और नवीन समस्याओं को जन्म देते हैं साथ ही किसी देश के मानव संसाधन को भी कमजोर करते है। पीडीएस में अभी भी कागजी फर्जीवाड़े, राशन गबन और अपात्र लाभार्थी का लाभ लेना जैसे विषय भी प्रासंगिक हैं। जलवायु परिवर्तन और बदलते मौसम ने खेती को अस्थिर कर दिया है। अनियमित वर्षा, सूखा और भारी बारिश से फसलें

प्रभावित हो रही हैं। बढ़ती गर्मी से गेहूँ, धान की पैदावार पर नकारात्मक असर पड़ रहा है, जिससे भविष्य में खाद्य सुरक्षा जोखिमपूर्ण हो सकती है।[18] महिलाओं की पोषण स्थिति और भी विषम है। लिंग के आधार पर भी भेदभाव देखा गया है, बालिकाएँ अक्सर अंत में खाना पाती हैं और उनको प्राथमिकता भी नहीं मिलती हालांकि इस तरह के मामले ग्रामीण परिवेश में अधिक देखने को मिलते हैं।[19] फलों और सब्जियों की उपलब्धता और उत्पादन संतोषजनक स्तर पर है, लेकिन उनकी बर्बादी एक बड़ी समस्या है। बर्बादी (food waste) का स्तर काफी ऊँचा है, कुछ अनुमानों के मुताबिक भारत में लगभग 30% से 35% भोजन बर्बाद हो जाता है।[20]

निष्कर्ष

सतत विकास लक्ष्य–02 यानी शून्य भूख को ध्यान में रखकर हमने एक विस्तृत चर्चा की और यह समझा कि शून्य भूख जैसे मसलों पर भारत का खराब प्रदर्शन किस तरह उसकी प्रगति में बाधा के समान है। विभिन्न आंकड़ों की सहायता से यह भी समझा कि हमें शून्य भूख जैसे मसलों पर अभी भी कार्य करना है। अपने अध्ययन के आधार पर हम इतना कह सकते हैं कि खाद्य उत्पादन जैसे मसलों पर हमने आत्मनिर्भरता तो हासिल की है, लेकिन पोषण सुरक्षा (Nutrition Security) अभी भी अधूरी है। बाल और मातृ पोषण (तालिका क्रमांक–03) की खस्ताहाल स्थिति भारत की मानव पूंजी (Human Capital) के लिए दीर्घकालिक खतरा बन चुकी है। जो हमारे वर्तमान ही नहीं भविष्य को भी कमजोर कर रहा है। एसडीजी–02 के लगभग सभी महत्वपूर्ण संकेतकों पर भारत का वर्तमान प्रदर्शन 2030 के लक्ष्यों से काफी पीछे है। कुपोषण के संकेतक तो लक्ष्यों से लगभग दोगुने हैं, जबकि कृषि उत्पादकता और किसान आय में भी लक्ष्य के मुकाबले कमी है। वर्तमान गति से 2030 तक 'शून्य भूख' का लक्ष्य प्राप्त कर पाना एक बड़ी चुनौती (लगभग असंभव) है। अगर हमें लक्ष्य प्राप्त करना है तो ठोस और कड़े कदम उठाने होंगे। विज्ञान और तकनीक का सदुपयोग करना होगा। साथी ही कुछ मुद्दों (भ्रष्टाचार) के लिए अपने नैतिक बल का प्रयोग करना होगा। कही ऐसा न हो भुखमरी का यह सामान्य सा बुखार कैंसर में ना बदल जाये और एक ऐसे दुष्चक्र का निर्माण कर दे जहां से समाज के एक हिस्से (कमजोर, गरीब, पिछड़े) का निकलना असंभव हो और भुखमरी मुक्त राष्ट्र केवल एक सुंदर स्वप्न बन कर रह जाये।

References

1. https://www.un.org/sustainabledevelopment/blog/2015/09/summit-charts-new-era-of-sustainable-development-world-leaders-to-gavel-universal-agenda-to-transform-our-world-for-people-and-planet/
2. https://globalgoals.org/goals/2-zero-hunger/
3. Sustainable Development Goals (SDR 2025), https://dashboards.sdgindex.org/rankings/
4. https://sdgtransformationcenter.org/
5. https://dashboards.sdgindex.org/static/profiles/pdfs/SDR-2025-india.pdf
6. https://dashboards.sdgindex.org/explorer/
7. NITI Aayog. SDG India Index 2023-24: Towards Viksit Bharat – Sustainable Progress, Inclusive Growth. Government of India, 2024. Available at: https://www.niti.gov.in/node/1350 (Accessed: 05 February 2025).
8. NITI Aayog. SDG India Index 2023-24: Towards Viksit Bharat – Sustainable Progress, Inclusive Growth. Government of India, 2024. Available at: https://www.niti.gov.in/node/1350 (Accessed: 05 February 2025).
9. NITI Aayog. SDG India Index 2023-24: Towards Viksit Bharat – Sustainable Progress, Inclusive Growth. Government of India, 2024. Available at: https://www.niti.gov.in/node/1350 (Accessed: 05 February 2025).
10. NITI Aayog, Government of India. SDG India Index 2023-24, 2024. Available at: https://sdgindiaindex.niti.gov.in".
11. Sen A. Poverty and famines: An essay on entitlement and deprivation. Oxford University Press, 1981.
12. Dutta PK. PL-480: When US choked food aid to shape India’s foreign policy. Firstpost, 2025. https://www.firstpost.com/india/pl-480-when-us-choked-food-aid-to-shape-indias-foreign-policy-13860119.html
13. Global Hunger Index Report, 2025.
14. Sinnreich HJ. The Physical, Mental, and Social Effects of Hunger. In: The Atrocity of Hunger: Starvation in the Warsaw, Lodz and, Krakow Ghettos during World War II. Cambridge University Press, 2023, 77-90.
15. Agarwal S. कुरुक्षेत्र: कुपोषण उन्मूलन में आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की भूमिका [PDF], 2020. Afeias.com. https://afeias.com/wp-content/uploads/2020/01/कुरुक्षेत्र–कुपोषण–उन्मूलन–में–आशा–और–आंगनवाड़ी–कार्यकर्ताओं–की–भूमिका-25-01-2020.pdf
16. Directorate of Economics & Statistics, Ministry of Agriculture & Farmers Welfare, Government of India. (2024). Agricultural Statistics at a Glance, 2024.
17. Government of India, department of agriculture and farmers welfare. (2023). Economic Survey 2024-25: Statistical Appendix Table 1.19. Retrieved from
18. Datta P, Behera B, Rahut DB. Climate change and Indian agriculture: A systematic review of farmers’ perception, adaptation, and transformation. Environmental Challenges,2022:8:100543. https://doi.org/10.1016/j.envc.2022.100543
19. Action Against Hunger. (n.d.). Gender inequality and hunger. Action Against Hunger UK. Retrieved November 18, 2025, from https://www.actionagainsthunger.org.uk/why-hunger/gender-inequality
20. Maurya, L. (2021, March 5). भारत में हर वर्ष करीब 6.88 करोड़ टन भोजन कर दिया जाता है बर्बाद [Web article]. Down to Earth.
21. कुपोषण मुक्ति अभियान भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए विभिन्न राष्ट्रीय अभियानों का एक समूह है, जिसका मुख्य उद्देश्य "कुपोषण मुक्त भारत" बनाना है। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय पोषण मिशन (पोषण अभियान) एक प्रमुख पहल है, जिसे 2022 तक कुपोषण के कुचक्र को तोड़ने के लक्ष्य के साथ शुरू किया गया था। इस अभियान का फोकस 0–6 वर्ष के बच्चों, गर्भवती महिलाओं और किशोरियों के पोषण में सुधार करना है।